वर्ष 2020 उच्च शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियां एवं अवसर

डॉ. भावना यादव

सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

सत्र 2020-21 में कोरोना महामारी के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, समाज, राजनीति सभी क्षेत्रों में चुनौतियां आयी। जिनके समाधान के नये-नये तरीकें भी आयें। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ऑन लाईन क्लास और ऑन लाइन परीक्षा जैसे समाधान अपने आप में चुनौती लेकर आये। इस सत्र में मध्यप्रदेश में 1178000 विद्यार्थी अध्ययनरत् थे। जिन सभी के लिये ऑन लाइन शिक्षा आदर्श नहीं कहीं जा सकती। परन्तु इसे अवसर के रूप में उपयोग तक भी सीमित नहीं किया जा सकता। हमें समय के साथ इसके क्षेत्र को व्यापक करना होगा ताकि हर समय विद्यार्थी और शिक्षक हर प्रकार से इसके उपयोग हेतु समर्थ हो सकें।

मुख्य शब्द - कोरोना, लॉकडाउन, ऑन लाइन शिक्षा, उच्च शिक्षा, नई शिक्षा नीति।

वैसे तो हर वर्ष आता है नई चुनौतियों और संभावनाओं के साथ और छोड़ जाता है अपने अमिट अनुभवों को। ऐसा ही एक वर्ष या कहना चाहिये एक सत्र 2020-21 ने अपनी यात्रा के प्रारंभिक दिनों में ही आने वाले पूरे सत्र की दिशा दिखा दी थी। यह और बात है कि हम उस दिशा की दशा का आकंलन उस समय नहीं कर पाये। परंतु जैसे-जैसे सत्र कोरोना कोविड-19 महामारी के साथ आगे बढ़ता गया वैसे-वैसे विश्व में सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में समस्याओं और जटिलताओं के बीच मानव जीवन में नित नये अनुभव जुड़ते गये।

यदि हम इस सत्र 2020-21 को देखे तो हर क्षेत्र हर आयाम पर हर कुछ पहले से अलग था। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आये परिवर्तनों एवं अभूतपूर्व चुनौतियों और अवसरों की इस शोध पत्र में व्याख्या की गई है। कोरोना ने 2020 में शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण तीनों को प्रभावित किया। जहां शिक्षा में तकनीकी परीक्षा हुई तो स्वास्थ्य में मिलकर काम करने की क्षमतायें सामने आईं साथ ही लॉक डाउन ने पर्यावरण को राहत दी।

यह सच है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह सत्र कठोर चुनौतियों से भरा था। जिसका प्रभाव शिक्षा के हर आयाम पर प्रत्यक्षतः पड़ा। कोविड-19 विश्व में अपने पैर पसार रहा था पर हम सभी इसके परिणामों से बेखबर अपने कार्यों में लगे थे। फिर धीरे-धीरे विदेशों की जगह भारत में भी कोरोना मरीजों की संख्या खबरों में आने लगी और फिर एक दिन सब थम गया। 'लॉकडाउन' यह शब्द हमारे जीवन का अंग बन गया। हर ओर महामारी की दहशत और उससे ना निपट पाने की बेचैनी के साथ उच्च शिक्षा संस्थाओं के दरवाजे विद्यार्थियों के लिए बंद हो गये। फिर

 ISSN 2395-051X

शुरू हुआ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों का दौर। ''कोरोना का विपरीत प्रभाव यूं तो हर सेक्टर पर पड़ा है मगर कुछ सेक्टर्स ने यह साबित किया है कि पारंपरिक तरीकों के वाधित होने पर यहां नए प्रयोग करने और उन्हें काफी बड़े पैमाने पर लागू करने के अवसर और क्षमता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी कुछ ऐसा ही हुआ है आंकड़ों पर गौर करें तो कोरोना महामारी ने करीब 160 करोड़ छात्रों की पढ़ाई पर असर डाला। उन्हें विल्कुल नई व्यवस्था आजमाने को मजबूर किया।'' इन चुनौतियों की तीन भागों में व्याख्या इस शोध पत्र में की गई है। एक विद्यार्थियों के स्तर पर, दूसरा शिक्षकों के स्तर पर, तीसरा नीति निर्माताओं के स्तर पर। सवसे पहले हमारे कुशल प्रशासकों की और डायनमिक लीडरशिप की और देखें तो हम पाते हैं कि दोनों ही इन परिस्थितियों में हतप्रभ थे। ये परिस्थितियां कव तक रहेंगी, इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं था। कहते हैं समय रुकता नहीं है यही उसकी खूवसूरती भी है ऐसे ही समय के प्रवाह ने शिक्षा जगत की समस्यायें वढ़ायी। प्रश्न यह था कि किस प्रकार वचे हुए कोर्स को पूरा किया जाये, कैसे परीक्षा करायी जाये, किस प्रकार वंद संस्थाओं में जहां युवाओं की उमंगों से परिसर गुलजार रहते थे वहां महामारी के बिखरें सन्नाटों को खत्म किया जाये। ऐसे में कुछ अधिकारियों, कर्मचारियों, प्राचार्य और शिक्षकों ने घरों से निकलने का जोखिम उठाया और सामने खड़ी इस चुनौती से निपटने की योजना वनाना शुरू किया। यह वह समय था जबकि कोरोना किस अवधि तक रहेगा और भविष्य में इसके क्या प्रभाव होंगे उसके परिणाम क्या होंगे इसका आंकलन करना भी एक चुनौती ही था।

ऐसे में ऑनलाइन क्लास के विकल्प में चुना गया ''इसके वाद तमाम संस्थाओं ने अध्यापन के लिए इंटरनेट की सहायता से गूगल मीट, जूम आदि का उपयोग करते हुए छात्रों को उनके घर पर अध्यापन कार्य करने का सराहनीय प्रयास किया। अकादमिक अंतःक्रिया के लिए इस डिजिटल माध्यम का उपयोग अनंत संभावनायें लिए हुए हैं।''

''मध्यप्रदेश में सत्र 2020 में 11,78,000 विद्यार्थी 299 कोर्स में 1405 महाविद्यालयों तथा 49 वि.वि. में अध्ययनरत् थे।''[3] जिनमें से अधिकांश सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों से थे। जहां आज भी जीवन की मूलभूत आवश्यक सुविधायें लाइट, पानी, भोजन का अभाव है। ऐसे में नीति निर्माताओं के लिए कठिन था किस मार्ग का चयन करें जिस पर सभी विभिन्नता के वाद भी सभी एक साथ चल सकें। पूर्व से धन आभाव से जुझती उच्च शिक्षा यहां शिक्षण संस्थाओं में ऐसी किसी तकनीक को नहीं प्राप्त कर सकी और फिर शुरू हुआ समस्याओं में संभावनाओं को तलाशने का सिलसिला। यहां मनुष्य की असीम शक्ति ने महामारी की चुनौती को एक अवसर के रूप में स्थापित किया। यह अवसर था ऑनलाइन क्लास। जिसके विषय में न तो शिक्षकों को न ही विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण दिया गया था। ना प्रशिक्षण देने की संभावना वन पा रही थी। साथ ही धन अभाव के कारण विद्यार्थियों की किसी भी प्रकार से सहायता भी संभव नहीं थी ''महामारी ने हमें दिखा दिया कि तकनीक में निवेश करना बहुत जरूरी है। ताकि एक ऐसा माहौल वनाया जा सके जिसमें वच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। यह व्यवस्था भौगोलिक दूरियों और डिजिटल डिवाइड को भी पाटने में सक्षम हो''[4]।

यहीं से शुरू हुई उन लाखों विद्यार्थियों के लिए नई चुनौतियां जिन्होंने स्मार्टफोन, एनड्रायड फोन, लैपटॉप, ईमेल आईडी, इंटरनेट जैसी अनेकों तकनीकों का पहले कभी उपयोग नहीं किया था। उनके लिये ऑनलाइन क्लास

शुरू की गई। दूसरी ओर महामारी धीरे-धीरे अपने चरम पर पहुंच रही थी जिसके मानसिक दबाव के बीच लॉकडाउन समाप्त हो गया फिर भी उच्च शिक्षण संस्थाओं के दरवाजे विद्यार्थियों के लिये बंद ही थे।

अब सभी की चिन्ता का विषय था परीक्षा। किस प्रकार यूजी, पीजी फाइनल ईयर के विद्यार्थियों के भविष्य की रक्षार्थ परीक्षाओं को कराया जाया। जहां समृद्ध शहरी क्षेत्रों के तकनीकी शिक्षा संस्थाओं में ऑनलाइन एग्जाम आसान थे। वहीं मध्यप्रदेश की बात करें तो चाहे वह बघेलखंड हो या बुंदेलखंड हमारे विद्यार्थियों तक ऑनलाइन एग्जाम पेपर का पहुंचना ही कठिन था फिर भी पेपर पहुंचे परीक्षायें हुई। फिर आया कापियों को संकलित करने का समय जिसके लिए विद्यार्थी घर से निकले तो शिक्षक भी अपने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य के लिए इस कार्य को करने एकजुट हुये। स्वाभाविक है अगली चुनौती थी कॉपियों का मूल्यांकन। जिन्हें कहीं भी भेजना या घर ले जा कर चेक करना भी एक जोखिम भरा कार्य था। ऐसे समय मैंने शिक्षक के रूप में अनुभव किया कि उच्च शिक्षा ने स्वतंत्र भारत को बहुत कुछ दिया। उसी के परिणामों और प्रभावों के परीक्षण का दौर है सत्र 2020-2021 जिसने हमारी पारंपरिक शिक्षण की विधियों और पद्धतियों को ही बदल दिया। हमारे मध्य हमारे अनुभवी ऐसे वरिष्ठ प्राध्यापक भी हैं जो प्रायः नई तकनीकों से दूर रहते थे। उन्होंने भी इन ऑनलाइन क्लास की चुनौतियों को स्वीकार किया। उच्च शिक्षा जगत के लिये यह एक नये सबेरे जैसा है जहां नित बढ़ती छात्र संख्या को छोटे-छोटे कमरों वाले महाविद्यालयों में समेटना मुश्किल था। वही ऑनलाइन क्लास में उच्च शिक्षा को सहजता में बदल दिया। आज सुदूर गांव में अपने आंगन में बैठी छात्रा शिक्षा ग्रहण कर रही है तो उसके परिजन भी इस सुखद अनुभव में उसका साथ दे रहे हैं। यह तो उच्च शिक्षा का वह उजला पक्ष है जिसका दायरा सीमित है। "कोविड-19 ने शिक्षा में तकनीक को आवश्यक रूप से अपनाए जाने का महत्वपूर्ण सबक दिया है। कक्षाओं का स्वरूप बदल गया है। पढ़ाने के पारंपरिक तरीके के साथ अब एडेक्स जैसे प्लेटफार्म पर उच्च गुणवत्ता वाली ऑनलाइन सामग्री का ब्लेंडेड स्वरूप उपलब्ध है।[5]

"परन्तु आज अधिकांश विद्यार्थी इससे वंचित है वहीं दूसरी ओर महाविद्यालय में शिक्षक के समक्ष बैठकर ज्ञान अर्जित करते हुए इस प्रक्रिया के साथ उच्च शिक्षा विभाग द्वारा वर्ष भर कराई जाने वाली विभिन्न गतिविधियां यथा खेल, युवा उत्सव, छात्रसंघ, एनएसएस, एनसीसी, विवेकानंद प्रकोष्ठ आदि उसके व्यक्तित्व का विकास कर उसके आत्मविश्वास को तो बढ़ाते ही थे साथ ही उसके ज्ञान का दायरा भी व्यापक करते थे। जिनका आभाव दिखाई दे रहा है। सत्र 2020-21 का आरंभ ही ऑनलाइन क्लास से हुआ जहां घर से कक्षायें लेने में एक अनुशासन की कमी सदैव अखरी चूंकि एक विधिवत तंत्र से चलने वाली कक्षाओं का स्थान वर्क फ्रॉम होम कल्चर विशेषतः शिक्षा के क्षेत्र में पूर्णतः नहीं अपनाया जा सकता। क्योंकि जहां इन्टरेक्शन शिक्षा छात्र संवाद ही सीखने का आधार हो। विद्यार्थी सिर्फ शिक्षक के वक्तव्य से ही नहीं अपितु उसके परिधान व्यवहार, शरीरिक अंग विक्षोभ आदि से भी प्रभावित हो अनजाने में ही जीवन के कई पक्षों के लिए तैयार होता है। साथ ही ऐसे विषय जो कि प्रयोगों एवं तकनीकि पर आधारित है यथा इंजीनियरिंग, मेडिकल तथा साइंस के विभिन्न विषयों का प्रायोगिक कोर्स पूर्ण करना आज बड़ी चुनौती है। वास्तव में ऑनलाइन अध्यापन भले ही वह ई-लेब से क्यों न हो वह गुणवत्ता उत्पन्न नहीं कर सकता जो विद्यार्थी स्वयं करके अधिगम करता है।

संस्थाओं में वित्तीय संकट भी चुनौती बन कर उभरा। जहां शासकीय महाविद्यालय वि.वि. में पढ़ाने वाले

अध्यापक तो इसका सामना करने से बच गए परंतु निजी संस्थान जो स्वंय अपना राजस्व उत्पादित कर संस्था के खर्च चलाते हैं उनके अस्तित्व दांव पर लग गये।

इसी समय 1986 के बाद वर्ष 2020 में आयी हमारी तीसरी नई शिक्षा नीति जिसमें हमें आने वाले समय में उच्च शिक्षा का नया स्वरूप दिखाई देगा। इस नई शिक्षा नीति में जहां 40 प्रतिशत ऑनलाइन क्लास होने का प्रस्ताव है तो दूसरी ओर शोध एवं उच्च शिक्षा को उच्चस्तरीय बनाने हेतु दिशा निर्देश है। नवाचार स्टार्टअप तथा आत्मनिर्भर बनाने हेतु छात्रों एवं शिक्षकों को प्रेरित कर अनुप्रयोग करने की स्वतत्रता की बात भी इसमें कही।

नई शिक्षा नीति में "डिजिटल लर्निंग को बढ़ावा देने के लिए नेशनल एजुकेशन टेकनोलॉजी फोरम (NETF) बनेगा। इससे शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ अध्ययन व आकलन में तकनीक अहम हिस्सा बनेगी।"[6] साथ ही ऐसी जगह जहां पारंपरिक और व्यक्तिगत शिक्षा का साधन नहीं होगा वहां स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों को ई-माध्यमों से मुहैया कराया जाएगा। NETF का मकसद प्राइमरी से उच्च और तकनीकी शिक्षा तक है प्रौद्योगिकी का सही और बेहतर उपयोग करना है।

आज विश्व तेजी से बदल रहा है वर्षों में आने वाली वैक्सीन के स्थान पर कोरोना की वैक्सीन मात्र 8 माह के शोध के बाद परीक्षण के दौर में है। सूचना क्रांति के इस दौर में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है क्योंकि सूचनाएं सभी क्षेत्रों से आ रही हैं जरूरत है कि इन सूचनाओं को शिक्षा में कैसे शामिल किया जाये। इसका प्रयास भी नई शिक्षा नीति में है।

इस पेपर को लिखते हुये मुझे स्वयं यह अनुभव हुआ कि जहां पहले हम उच्च शिक्षा पर शोध पत्र प्रस्तुत करते थे उनके कन्टेन्ट में और 2020 में लिखे इस शोध पत्र के कन्टेन्ट में बहुत अंतर है। पहले हम पारंपरिक शिक्षा, महिला शिक्षा, रोजगार हेतु शिक्षा, नैतिक शिक्षा, मूल्य आधारित शिक्षा, बेरोजगारों की फौज खड़ी कर रही शिक्षा की बात करते थे। वहीं आज हमारा हम सभी का फोकस है ऑनलाइन पढ़ाई जिसमें शिक्षा के उद्देश्य और दायित्व का समावेश तो हो साथ ही वैश्विक प्रतिस्पर्धा में योग्य आत्मविश्वास से भरे नागरिकों का निर्माण भी संभव हो सके। आधुनिक शिक्षा का यह रूप हमारे लिये आश्चर्यजनक अवश्य है परंतु यही वह मार्ग है जिस पर चलकर जिस महाविद्यालय में मैं कार्यरत हूं 13500 छात्राओं पर 43 परमानेंट शिक्षकों एवं 40 अतिथि विद्वानों के द्वारा 32 कक्षों के महाविद्यालय में अध्ययन अध्यापन संभव होगा। आज वर्क फ्रॉम होम की तरह लर्न फ्रॉम होम की आवश्यकता है। "महामारी से प्रभावित दुनिया में शिक्षा का उद्देश्य अधिक समान और न्यायपूर्ण समाज बनाना है, सभी के सीखने के लिए समान अवसर पैदा करना है साथ ही लोगों को अपने कौशल में सुधार लाना है, शिक्षा के तकनीकी सक्षम होने से शिक्षण व सीखने का तरीका भी बदल रहा है। डिजिटल लर्निंग शिक्षा पर सबकी समान पहुंच को अधिक आसान बनाएगी। छात्र जहां होंगे, वहीं से सीखने में सक्षम होंगे।[7]

यह सत्य है कि कई परिवर्तन धीरे-धीरे आते हैं या लाये जाते हैं। और कई परिवर्तन अनजाने में व्यापक रूप से आते हैं वर्ष 2020 ऐसे ही परिवर्तनों का सत्र रहा है जो आपका हमारा विद्यार्थियों का शिक्षा और शिक्षण परंपराओं के प्रति बदलाव के वर्ष के रूप में जाना जाएगा। आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हम तकनीक के

प्रवाह में संवेदना, सहानुभूति, परंपराओं, संस्कृति, आचरण, नैतिकता का समावेश करें। क्योंकि हमारा उद्देश्य अच्छे नागरिक बनना है न कि अच्छे मशीन रूपी नागरिकों का निर्माण करना। हम सभी इस से सहमत होंगे कि लॉकडाउन तो हुआ पर शिक्षा डाउन नहीं हुई। इस दौर में सेमिनारों की जगह वेबिनारों ने ली हमारे महाविद्यालय ने जहां विगत कुछ वर्षों में विभिन्न कारणों से कोई भी सेमिनार नहीं कराया गया था वहां लॉकडाउन के दौर में 14 वेबिनार किये गये। जहां सामान्यतः एक सेमीनार में 200 से 300 लोग सहभागिता करते थे और खर्च आता था लगभग एक लाख रू. से ऊपर वहीं हर वेबीनार में विद्वानों की संख्या लगभग 1500 से 3000 रही साथ ही यूट्यूब पर कभी भी उसे देखा सुन जा सकता है और खर्च मात्र कुछ 2000 से 3000 के मध्य रहा। (इसमें वक्ताओं का मानदेय नहीं जोड़ा गया)। हम सभी ने उच्च शिक्षा में इस परिवर्तन को देख उसके सहगामी बने और मुझे लगता है भविष्य में इस पर चलाने को तैयार हैं। यह सत्य है कि ऑनलाइन शिक्षा आदर्श नहीं कहीं जा सकती पर उसके उपयोग को अवसर के रूप में स्वीकारना ही उसे सकारात्मक दिशा की ओर ले जाता है। आज ऑनलाइन शिक्षा वैकल्पिक और पूरक दोनों भूमिकाओं में हमारे समक्ष है।

आवश्यकता सिर्फ इसे बनाए रखने की और इसके क्षेत्र को इतना व्यापक करने की है कि हर सामान्य विद्यार्थी और शिक्षक हर प्रकार से इसके उपयोग हेतु समर्थ हो सके। बदलते समय में मानव पूंजी का विकास हो, इसके लिए वर्चुअल शिक्षा का प्रभावी नेटवर्क स्थापित करना होगा। तभी क्लासरूम टीचिंग के साथ ऑनलाइन टीचिंग को मिलाकर पूर्व की और वर्तमान की बाधाओं और समस्याओं का निराकरण संभव होगा।

संदर्भ -

1. दैनिक भास्कर 30.12.2020, पृ. 8
2. दैनिक जागरण, दिल्ली, 2 जून 2020
3. वेव माध्यम से
4. दैनिक भास्कर 30.12.2020
5. दैनिक भास्कर 02.01.2021
6. पत्रिका 30 जुलाई 2020
7. दैनिक भास्कर 2 जनवरी 2021

❖ ❖ ❖